कुण जाण या माया श्याम तेरी अजब निराली रै,
यो त्रिलोकी को नाथ जाट को बणगयो हाली रै ।। टेर ।।

1. सौ बीघा मं खेत जाट को, राम भरोसे खेती रै,
आधा मं बोया गेहूं चणा, आधा मं दाणा मेथी रै,
बिना बाड़ को खेत जाट क राम रुखाली रै ।। यो त्रिलोकी को ।।

2. भूरि भैंस चिमकणी जाट क, दो भेली दो न्यारी रै,
बिना बाड़ को बाड़ो जाट क, बांध न्यारा न्यारा रै,
चोर आवै और चक्कर लगावै जावै खाली रै ।। यो त्रिलोकी को ।।

3. जाट जाटणी सुख सुं सोवै, सोवै टाबर टोली रै,
श्याम धणी क पहरा मं या, कैयॉ होवै चोरी रै,
चोर आवै और ऊबो दीख, जावै खाली रै ।। यो त्रिलोकी को ।।

4. बाजरै की रोटी खावै, ऊपर घी को लचको रै,
पालक की तरकारी सागै, भर मूली को बटको रै,
छाछ राबड़ी का करै कलेवा, भर भर थाली रै ।। यो त्रिलोकी को ।।

5. नामदेव को छपरो छायो, लक्ष्मी बन्ध खिचायो रै,
चेजारो बण चिणबा लाग्यो, हाथां गारो ल्यायो रै,
चोबारो चिण तालो जड़ दियो, ले गयो ताली रै ।। यो त्रिलोकी को ।।

6. सोहनलाल लुहार श्याम यो घर भगतां क आवै रै,
धाबलिया क पड़दा की ओट म, श्याम खीचड़ो खावै रै,
भगतां क संग नाचै गावै, दे दे ताली रे ।। यो त्रिलोकी को ।।